मंथन

15 अगस्त 2026

स्टाफ क्लब

सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान

पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

CSIR-IHBT
INDIA
1983
उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब
Innovation Hub for Better Tomorrow

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 20 **अंक 2** **15 अगस्त 2026**

आमुख

स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" 2026 का दूसरा अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है, कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए भी प्रविष्टियां देते रहें, ताकि मंथन के आने वाले अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: गौरव ज़िंटा

संकलन: जसवीर कौर

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	बांस :प्रकृति का अनमोल उपहार और हरित अर्थव्यवस्था का आधार	अनीता कुमारी, अजय कुमार, किरण कुमारी और रोहित जोशी	03
2.	हिमालय की जैव विविधता	अवनेश कुमारी	05
3.	एक अधूरी ग़ज़ल	सौरभ शर्मा (Watson)	06
4.	कृष्णा	सौरभ शर्मा (Watson)	07
5.	कर्मचारी – अनकहा नायक	ज्योति	08
6.	मेरी शोध-यात्रा के सूत्रधार	राहुल सिंह	10
7.	पर्यावरण : प्रकृति का अनमोल उपहार	आकर्ष पाण्डे	13
8.	कुछ महान मित्रों की दुर्लभ प्रजाति पर एक हल्का-फुल्का शोध...	मीनाक्षी	14
9.	हिमालय : प्रकृति का सुंदर रूप	वामिका पाण्डे	16

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के परिवार के बच्चों की कृतियाँ

Arkita	18
Divyam Nadda	19
Samik Sood	20
Rhythm Syal	21
Sarita Devi	22
Anil Kumar	23
Himani Joshi	24
Ghritashi Nadda	25
Bhavika Gupta	26
Jivika Dhull	27
Yashkritiha Thakur	28
Akarsh	29
Atharv Rana	30
Deeptanshu Gain	31
Devangana Gain	32

बांस: प्रकृति का अनमोल उपहार और हरित अर्थव्यवस्था का आधार

कल्पना कीजिए, यदि कोई पौधा आपकी आँखों के सामने एक ही दिन में लगभग 3 फीट (91 सेंटीमीटर) तक बढ़ जाए! यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि बांस की वास्तविक विशेषता है। यही कारण है कि बांस को दुनिया का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला पौधा माना जाता है और इसका नाम गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। आश्चर्य की बात यह है कि बांस कोई पेड़ नहीं, बल्कि घास कुल (Poaceae) का सबसे बड़ा सदस्य है।

दुनिया भर में बांस की 1,600 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से 130 से अधिक प्रजातियाँ भारत में मिलती हैं। हिमालय की पहाड़ियों से लेकर उष्णकटिबंधीय वनों तक, बांस प्रकृति का एक अनमोल उपहार है। इसकी भूमिगत जड़ें (राइजोम) हर वर्ष नए अंकुर पैदा करती हैं, इसलिए एक बार लगाया गया बांस दशकों तक बिना दोबारा रोपण के लगातार उत्पादन देता रहता है।

बांस की सबसे बड़ी विशेषता केवल इसकी तेज़ वृद्धि नहीं, बल्कि इसकी अद्भुत मजबूती भी है। इसकी तन्य शक्ति (Tensile Strength) इतनी अधिक होती है कि इसकी तुलना कई परिस्थितियों में स्टील से की जाती है। यही कारण है कि आज बांस से घर, पुल, फर्नीचर, फर्श, कागज़, वस्त्र, हस्तशिल्प, जैव-अपघटनीय उत्पाद, संगीत वाद्ययंत्र, साइकिल और यहाँ तक कि आधुनिक भवन भी बनाए जा रहे हैं। एशिया के अनेक देशों में इसके कोमल अंकुर स्वादिष्ट और पौष्टिक सब्ज़ी के रूप में खाए जाते हैं।

बांस केवल मानव जीवन के लिए ही नहीं, बल्कि पर्यावरण के लिए भी वरदान है। इसकी मजबूत जड़ें मिट्टी के कटाव को रोकती हैं, ढलानों को स्थिर बनाती हैं और बंजर भूमि को फिर से हरा-भरा करने में मदद करती हैं। यह वातावरण से बड़ी मात्रा में कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही कारण है कि आज बांस को "ग्रीन गोल्ड" (हरित स्वर्ण) कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं कि विशाल पांडा (Giant Panda) अपने भोजन का लगभग 99 प्रतिशत हिस्सा बांस से प्राप्त करता है? इतना ही नहीं, बांस की कुछ प्रजातियाँ 30 से 120 वर्षों में केवल एक बार फूल देती हैं। इस सामूहिक पुष्पन (Gregarious Flowering) के बाद कई बार पूरा बांस वन समाप्त हो जाता है। यह प्रकृति की सबसे रहस्यमयी घटनाओं में से एक मानी जाती है और आज भी

वैज्ञानिक इसके रहस्यों को समझने में जुटे हैं।

आधुनिक विज्ञान में भी बांस का महत्व लगातार बढ़ रहा है। सीएसआईआर-आईएचबीटी द्वारा जीनोमिक्स, ट्रांसक्रिप्टोमिक्स, ऊतक संवर्धन (टिशू कल्चर) और जैव प्रौद्योगिकी की सहायता से उच्च गुणवत्ता वाले बांस के पौधे तैयार किए जा रहे हैं। इसके आधार पर टिकाऊ निर्माण सामग्री, हरित ऊर्जा, पर्यावरण-अनुकूल पैकेजिंग और भविष्य की जैव-अर्थव्यवस्था (Bioeconomy) विकसित की जा सकती है।

बांस केवल एक पौधा नहीं, बल्कि प्रकृति की शक्ति, लचीलेपन और सतत विकास का जीवंत प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि ऊँचाइयाँ पाने के लिए केवल तेज़ी नहीं, बल्कि मजबूत जड़ें और परिस्थितियों के अनुसार झुकने की क्षमता भी आवश्यक है। आने वाले समय में जब पूरी दुनिया पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ संसाधनों की ओर बढ़ रही है, तब बांस निस्संदेह हरित भविष्य का सबसे मजबूत आधार बनकर उभरेगा।

क्या आप जानते हैं? (Did You Know?)

- बांस दुनिया का सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला पौधा है।

- बांस विश्व के सबसे टिकाऊ एवं नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधनों में से एक है
  बांस वास्तव में पेड़ नहीं, बल्कि घास है।
  बांस की Tensile Strength हल्के स्टील के बराबर तथा Compressive Strength कंक्रीट के समान होती है।

- बांस से 10,000 से अधिक प्रकार के उत्पाद बनाए जाते हैं।
  बांस को आज विश्वभर में "हरित स्वर्ण" (Green Gold) के नाम से जाना जाता है।

- बांस के कोमल अंकुर एशिया के अनेक देशों के पारंपरिक व्यंजनों में स्वादिष्ट एवं पौष्टिक सब्ज़ी के रूप में बड़े चाव से खाए जाते हैं।

अनीता कुमारी, अजय कुमार, किरण कुमारी और रोहित जोशी

हिमालय की जैव विविधता

हिमालय की ऊँची चोटियों पर,
प्रकृति ने दुनिया को सजाया है,
फूलों, पत्तों और जड़ी-बूटियों में,
इसने जीवन का आशीर्वाद छिपा रखा है।

देवदार की ऊँची शाखाएँ,
बुरांश के लाल फूल,
चाय बागानों की हरियाली,
पृथ्वी के हर हिस्से को खुशबू से भर देते हैं।

कहीं औषधियों का अनमोल खजाना,
कहीं सुगंधित पौधों का फूल,
कहीं मशरूम, शहद और अनाज,
प्रकृति हजारों उपहार देती है।

नदियों का शुद्ध बहता पानी,
जंगलों में जीवन की धुन,
पक्षी, तितलियाँ, फूल और मधुमक्खियाँ,
सब प्रकृति का मधुर गीत गाते हैं।

विज्ञान इन संसाधनों में जीवित है,
अनुसंधान नए दरवाजे खोलता है,
स्वास्थ्य, कृषि और आजीविका में,
वे मानवता के सहायक बनते हैं।

आओ, मिलकर एक संकल्प लें,
इस संपदा का सम्मान करने का,
संरक्षण और सतत उपयोग के माध्यम से,
हिमालय के भविष्य को सजाएँ।

हिमालय केवल पर्वत ही नहीं हैं,
वे जीवन की अनोखी नींव हैं,
इसकी जैव विविधता पृथ्वी का
सबसे सुंदर उपहार है।

डॉ. अवनेश कुमारी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (3)

एक अधूरी ग़ज़ल

मैं बाप के दिल में, माँ की हर साँस में हूँ ।
मैं रेगिस्तान की सूखी हुई घास में हूँ ।।

मुझे मत ढूँढना अब गाँव की गलियों में ।
मैं तो आजकल कृष्ण के रास में हूँ ।।

सुना है सोश्ल मीडिया पर बड़ा याराना है तेरा ।
मुझे जानता है क्या! मैं तो तेरे पास में हूँ ।।

यदि बुलाएगा तो आऊँगा तेरी शादी में ।
बिन बुलाएँ आऊँ, मैं कोनसा तेरे ख़ास में हूँ।।

मैं पागल मोहब्बत ढूँढ रहा था बाज़ारों में ।
फिर एक आवाज़ आई,इधर आ मैं तो चाय के ग्लास में हूँ ।।

कल रात तू मेरे सपने में आया था "सौरव"।।
कोई कहेगा ऐसा,मुद्दतों से इस आस में हूँ ।।

सौरभ शर्मा (Watson)

कृष्णा

कृष्ण अद्भुत है, दुर्लभ है, परखवान है।
गीता जैसा ग्रंथ,सनातन का अभिमान है ।।

शृंगार रुक्मिणी का, बिन गायों के बेजान है ।
मीरा का विश्वास,राधा का अरमान है ।।

दु:शासन का खौफ़,द्रौपदी का आह्वान है ।
दिनकर अर्जुन का, जयद्रथ का श्मशान है ।।

माखनचोर,छलिया बचपन, कारावास में जन्मा वो ।
महाभारत का छद्म सारथी , प्रेम का स्वाभिमान है ।।

सुदामा की वेदना को,अपने आँसुओं से धोने वाला।
मेरा सखा कृष्ण ही , लोगों का भगवान है ।।

सौरभ शर्मा (Watson)

कर्मचारी – अनकहा नायक

हर सुबह जब सूरज उगता है,
एक सपना फिर जागता है।
अपने घर की मुस्कानों के लिए,
एक कर्मचारी फिर निकल पड़ता है।

न हाथों में कोई ताज होता,
न नाम अख़बारों में छपता है।
फिर भी उसकी मेहनत से ही,
हर संस्थान आगे बढ़ता है।

कभी धूप की तपिश सहता है,
कभी बारिश में भीग जाता है।
कभी रातों की नींद गंवाकर,
दूसरों का कल संवार जाता है।

घर से निकलते समय बच्चों की,
मासूम आँखें रोकती हैं।
लेकिन जिम्मेदारियों की राहें,
हर भावना से बड़ी होती हैं।

माँ-बाप की उम्मीदों का सहारा,
जीवनसाथी की मुस्कान है।
हर अधूरी इच्छा को भूलकर,
वह निभाता अपना सम्मान है।

कभी उसकी मेहनत दिखती नहीं,
बस परिणाम दिखाई देते हैं।
जो इमारतें ऊँची लगती हैं,
उनकी नींव वही बनाते हैं।

थक जाता है...
फिर भी रुकता नहीं।
टूट जाता है...
फिर भी झुकता नहीं।

क्योंकि उसे पता है—
उसकी एक-एक कोशिश में,
किसी का भविष्य छिपा है,
किसी परिवार की खुशी बसी है।

वह केवल वेतन नहीं कमाता,
विश्वास भी कमाता है।
अपने पसीने की हर बूँद से,
सम्मान की कहानी लिख जाता है।

कभी कोई "धन्यवाद" नहीं कहता,
कभी कोई ताली नहीं बजती।
फिर भी वह मुस्कुराकर,
अपनी जिम्मेदारियाँ निभाता रहता है।

उसकी चुप्पी में त्याग है,
उसकी आँखों में हजारों सपने हैं।
उसके कदमों में संघर्ष है,
उसके दिल में अपनों के अपने हैं।

हर सफलता के पीछे कहीं,
उसकी मेहनत का उजाला है।
वह मंच पर दिखाई भले न दे,
पर वही हर जीत का रखवाला है।

आज अगर कोई मंज़िल मिली है,
तो उसमें उसका भी हिस्सा है।
हर उपलब्धि के हर अक्षर में,
उसकी मेहनत का किस्सा है।

आओ आज सिर झुकाकर,
उन कर्मवीरों का सम्मान करें।
जो अपने सपनों से पहले,
हमारे सपनों का ध्यान करें।

हे कर्मयोगी!
तुम केवल कर्मचारी नहीं,
उम्मीदों के प्रहरी हो।
तुम्हारी मेहनत से ही
संस्थाएँ जीवित रहती हैं,
परिवार मुस्कुराते हैं,
और समाज आगे बढ़ता है।

तुम्हें सलाम...
तुम्हारी ईमानदारी को सलाम...
तुम्हारे संघर्ष को सलाम...
और उस मुस्कान को सलाम,
जो हर दर्द छिपाकर भी
दूसरों के लिए रोशनी बन जाती है।

ज्योति
सहायक अनुभाग अधिकारी
प्रशासन (भर्ती एवं मूल्यांकन)

मेरी शोध-यात्रा के सूत्रधार

कभी अणुओं की गति में
जीवन की गति तलाशता रहा,
कभी प्रोटीन की बदलती संरचना में
अपने प्रश्नों के उत्तर खोजता रहा।

एम.डी. सिमुलेशन की लंबी राहों में
हर पल कुछ नया देखा,
कभी संरचना स्थिर मिली,
कभी समय ने सब कुछ बदलता देखा।

डॉकिंग ने मिलन की संभावनाएँ बताईं,
किसी बंधन की गहराई समझाई,
पर गुरु ने सिखाया,
हर सही मिलन केवल अनुकूलता से नहीं,
धैर्य और समझ से भी बनता है।

एस.एम.डी. ने जब खींचा किसी बंधन को,
तो बल और दूरी का अर्थ समझ आया,
पर जीवन ने उससे बड़ा सबक दिया,
खींचाव कितना भी हो,
विश्वास हो तो रिश्ता नहीं टूटता।

अम्ब्रेला सैम्पलिंग में
ऊर्जा की बाधाओं को पार किया,
हर विंडो में एक नया रास्ता देखा,
गुरु ने भी हर कठिन मोड़ पर
एक नई दिशा दिखलाई।

कभी एम.एम./पी.बी.एस.ए. ने
बंधन की ऊर्जा का हिसाब लगाया,
कभी ए.बी.एफ.ई. ने
मिलन की वास्तविक कीमत समझाई; तब जाना,
हर रिश्ते का मूल्य संख्याओं में नहीं होता,
कुछ बंधनों की ऊर्जा
मनुष्य अपने भीतर महसूस करता है।

क्यू.एम.-एम.एम. ने सिखाया
कि हर सत्य को कई स्तरों पर समझना पड़ता है,
और डी.एफ.टी. ने बताया
कि सूक्ष्म-सी दुनिया में भी
कितनी गहरी कहानी छिपी होती है।

फिर शोध की राह में
कभी परिणाम ने साथ छोड़ा,
कभी गणना ने उत्तर नहीं दिया,
कभी पांडुलिपि लौटी
और मन ने हार मानने को कहा।

तभी गुरु की शांत आवाज़ आई,
"अस्वीकृति से मत डरना,
यह तुम्हारी क्षमता का अंत नहीं,
तुम्हारी अगली कोशिश का आरम्भ है।"

उस एक वाक्य ने
कितनी बार संभाला है मुझे,
यह कोई ग्राफ नहीं बता सकता,
कोई ऊर्जा गणना नहीं कर सकती,
कोई सिमुलेशन दर्ज नहीं कर सकता।

आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ,
तो लगता है, मेरी शोध केवल प्रोटीन,
लिगैंड और ऊर्जा की कहानी नहीं थी।

यह उस गुरु की कहानी भी थी
जिसने परिणाम से अधिक
प्रयास पर विश्वास करना सिखाया;
जिसने असफलता से अधिक
सीख को महत्व दिया;
और जिसने हर कठिन रास्ते पर
शांत रहकर आगे बढ़ना सिखाया।

मेरी पूरी शोध-यात्रा यदि एक
लंबी ट्रैजेक्टरी है,
तो उसमें दिशा देने वाला
सबसे पहला हाथ आपका था।

आज मेरी उपलब्धियों में
जो कुछ मेरा है, वह मेरी मेहनत है,
पर उसमें जो विश्वास है,जो धैर्य है,
और हर असफलता के बाद
फिर उठ खड़े होने का साहस है,
उसमें मेरे गुरु का अंश है।

शायद यही गुरु और शिष्य के रिश्ते की
सबसे सुंदर "बाइंडिंग" है,
समय बदलता रहता है,
पर उसका प्रभाव
कभी अनबाउंड नहीं होता।

(राहुल सिंह)
सूत्रों के बीच संवेदनाएँ खोजता एक शोधार्थी

पर्यावरण : प्रकृति का अनमोल उपहार

पर्यावरण है जीवनदाता,
इससे जग में है प्राण,
पेड़-पौधे, नदियाँ, पर्वत,
इनसे है धरती की मुस्कान।

हरी-भरी धरती का आँचल,
धारण करता सुख अपार,
शुद्ध हवा और निर्मल पानी,
बनता है जीवन का आधार।

पेड़ लगाएँ, पेड़ बचाएँ,
अपनी धरती को दें मान,
जल, जंगल और जीव बचाकर,
रखें धरती का सम्मान।

नदियाँ निर्मल, वन हरियाले,
नीला नभ सुंदर आकाश,
स्वच्छ पर्यावरण से ही तो आए,
सब जीवन में तेज प्रकाश।

हम आज बचाएँ पर्यावरण तो,
कल सुरक्षित होगा जीवन और संसार,
धरती माँ की सेवा करना,
है हम सबका सच्चा प्रकृति से प्यार।

आओ मिलकर हम सब शपथ लें,
प्रकृति का रखेंगे ध्यान,
स्वच्छ, हरा और सुंदर भारत,
हमेशा बने हमारी पहचान।

आकर्ष पाण्डे (कक्षा 5)

कुछ महान मित्रों की दुर्लभ प्रजाति पर एक हल्का-फुल्का शोध...

दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिनके बिना हर ऑफिस, लैब, कॉलेज या ग्रुप अधूरा लगता है। ये लोग खुद को कभी हीरो नहीं कहते... बस ऐसा माहौल बना देते हैं कि बाकी लोग खुद समझ जाएँ।

इनकी पहली खासियत है "**ऑब्ज़र्वेशन स्किल्स**"। अपनी फ़ाइल कहाँ रखी है, ये भूल सकते हैं, लेकिन किसने क्या किया, कहाँ गया, कौन-सा प्रोजेक्ट मिला, किसकी तारीफ़ हुई... इसकी पूरी लाइव अपडेट इनके पास होती है। अगर किसी को कोई अच्छा प्रोजेक्ट मिल जाए, तो सबसे पहले मुस्कुराकर कहेंगे— ***"वाह! बहुत बढ़िया..."*** और मन ही मन सोचेंगे— *"देखते हैं, इसमें अपना नाम कैसे जोड़ना है।"*

अगर कोई नई स्किल सीखने लगे या पढ़ाई करने बैठे, तो तुरंत मोटिवेशनल स्पीकर बन जाएँगे— *"अरे यार! तुम्हें क्या ज़रूरत है पढ़ने की? तुम तो पहले से ही बहुत **इंटेलिजेंट हो...**"* और उसी शाम चुपचाप खुद किसी नए कोर्स में रजिस्ट्रेशन भी कर देंगे।

हर छोटी-बड़ी खुशी पर इनका पहला सवाल होता है—**"पार्टी कब दे रहे हो?"** लेकिन जब इनकी बारी आए, तो कैलेंडर, बजट, ग्रह-नक्षत्र और अर्थव्यवस्था—सब एक साथ बीच में आ जाते हैं।

इनका एक और अनमोल गुण है—**काम निकलवाने की कला।** ज़रूरत पड़े तो इतनी मिठास से बात करेंगे कि लगे दुनिया में आपसे अच्छा इंसान कोई नहीं। काम पूरा होते ही अचानक इन्हें बहुत ज़रूरी मीटिंग, कॉल या व्यस्तता याद आ जाती है। और चापलूसी... अरे, वो तो इनकी मातृभाषा होती है। जहाँ फ़ायदा दिखा, वहाँ तारीफ़ों का ऐसा महाकुंभ लगाएँगे कि सामने वाला भी सोचने लगे— *"**मैं इतना महान कब बन गया** ?"*

अब बात करते हैं इनकी सबसे बड़ी सुपरपावर की—**काम कम, माहौल ज़्यादा।** असल मेहनत चाहे पूरी टीम करे, लेकिन प्रेज़ेंटेशन ऐसा देंगे कि देखने वाला बोले— ***"बाकी लोग तो शायद सिर्फ़ फोटो खिंचवाने आए थे!"*** फोटो में सबसे आगे, मीटिंग में सबसे ऊँची आवाज़, और क्रेडिट की लिस्ट में सबसे ऊपर... यह प्रतिभा हर किसी के बस की बात नहीं होती।

इनका फेवरेट डायलॉग होता है—***"यार, मैं तो सुबह से इसी में लगा हूँ..."*** जबकि गवाह बताते हैं कि सुबह से ज़्यादा समय तो चाय, गपशप और "**नेटवर्किंग**" में निकला होता है। और तुलना करना तो इनका पसंदीदा खेल है। अगर कोई आगे बढ़ जाए तो कहेंगे—***"किस्मत अच्छी थी..."*** और अगर खुद थोड़ा-सा भी आगे निकल जाएँ तो पूरी आत्मकथा तैयार—***"बहुत संघर्ष किया है..."***

सामने मिलेंगे तो ऐसे गले लगेंगे जैसे आपकी सफलता पर सबसे ज़्यादा खुशी इन्हीं को हुई हो। लेकिन मुबारकबाद देने की बारी आए तो उँगलियाँ अचानक भारी हो जाती हैं। हाँ, आपकी कमियाँ ढूँढ़ने में इनका **5G इंटरनेट** कभी स्लो नहीं पड़ता।

ख़ैर... ऐसे अनमोल किरदार हर ग्रुप में ज़रूर होने चाहिए।

इनसे एक बात तो ज़रूर सीखने को मिलती है—**टैलेंट बाद में आता है, कॉन्फिडेंस पहले!** काम किसी और का हो, लेकिन एंट्री ऐसी मारो कि देखने वाले को लगे—**"अगर ये न होते, तो प्रोजेक्ट शुरू ही नहीं होता!"**

कुछ लोग मेहनत करके इतिहास बनाते हैं...
और कुछ लोग उसी इतिहास में अपना नाम जोड़ने की कोशिश करते रहते हैं।

भगवान इन्हें हमेशा खुश रखे... क्योंकि जहाँ ये होते हैं, वहाँ मनोरंजन की कोई कमी नहीं रहती। और हमें बस इतनी-सी कृपा मिले कि इनकी मुफ़्त की सलाह, मुफ़्त की तुलना और मुफ़्त की राजनीति से थोड़ा सुरक्षित रहें।

हाँ... **भगवान सबको ऐसे दोस्त ज़रूर दे... ताकि असली दोस्तों की पहचान अपने आप हो जाए।**

मीनाक्षी
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

हिमालय : प्रकृति का सुंदर रूप

बर्फीली चादर ओढ़े पर्वत,
नीला नभ है जिसके संग,
श्वेत शिखर पर सूरज उतरे,
जैसे चमकते सोने का रंग।

देवदार की खुशबू लेकर,
चलती मंद-मंद हवा बयार,
झरनों की झंकार सुनाती,
प्रकृति का मधुर-मधुर प्यार।

आंचल में जिसके नदियाँ बहतीं,
चट्टानों को हैं चूमतीं,
कल-कल करती निर्मल जल धाराएँ,
धरती की हैं प्यास बुझातीं।

फूलों की घाटी मुस्काती,
रंग फैलाते चारों ओर,
बुरांश खिले लाल अंगारों जैसे,
महके वन और भोर।

नीले गगन में उड़ते पंछी,
बादल में करते हैं खेल,
धूप कभी पहाड़ों पर ठहरे,
कभी फैलाए सुनहरी बेल।

हिमालय केवल पर्वत नहीं,
यह धरती की है शान,
इसके आँचल में है पलता,
जीवन का अनोखा वरदान।

ऋषियों की है ये तपोभूमि पावन,
संस्कृति का है ये आधार,
शांत शिखर हमें सिखलाते
धैर्य रखो हर बार।

हे हिमालय! गोद में तेरी,
हम सब के मन को मिलता है चैन,
तेरी निर्मल वादियों जैसा,
कहाँ मिलेगा सुंदर नैन?

जब तक सूरज, चाँद रहेंगे,
जब तक बहती नदियों की धार,
तब तक गूँजेगा जग में,
हिमालय का ही जयकार।

तू प्रकृति का है एक सुंदर रूप,
तू हमारी धरती का है अभिमान,
तेरी सुंदरता के आगे,
फीका है सारा जहान।

वामिका पाण्डे (कक्षा : 7)

अरकिता

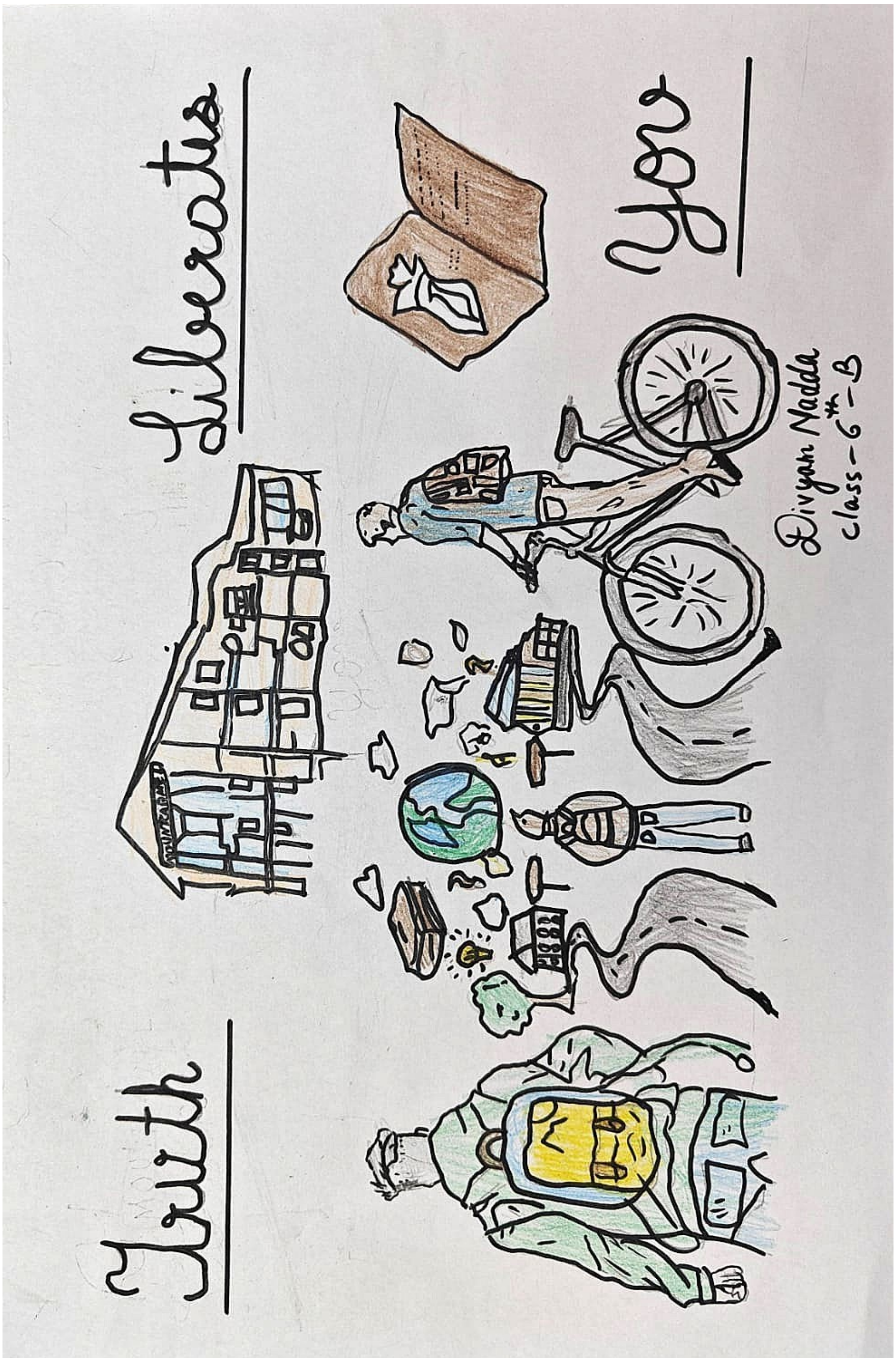

दिवयम नड़ड़ा

STOP POLLUTION
STOP NOISE POLLUTION
STOP AIR POLLUTION
STOP PLASTIC POLLUTION
STOP WATER POLLUTION

समिक सूद

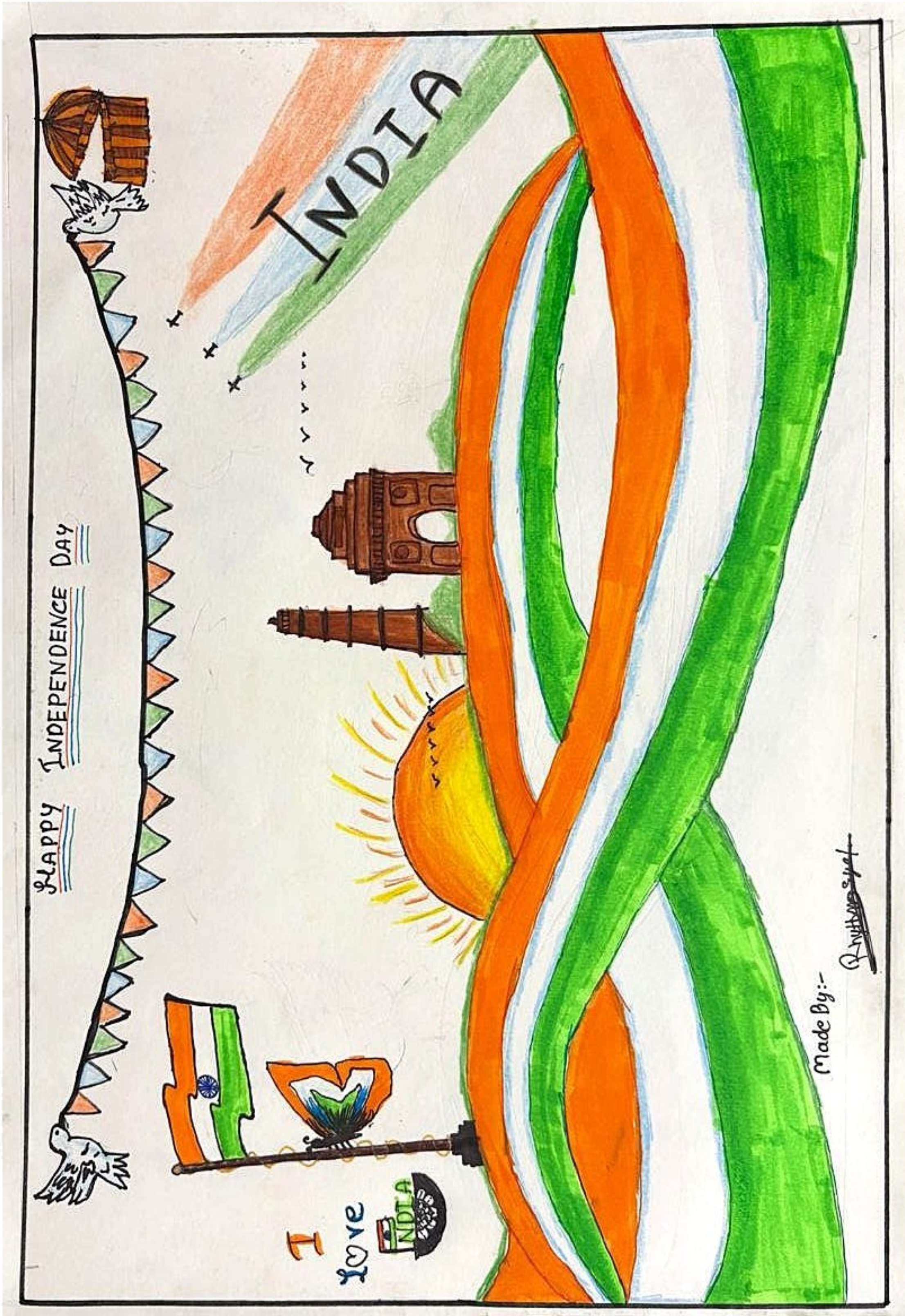

रिद्धम स्याल

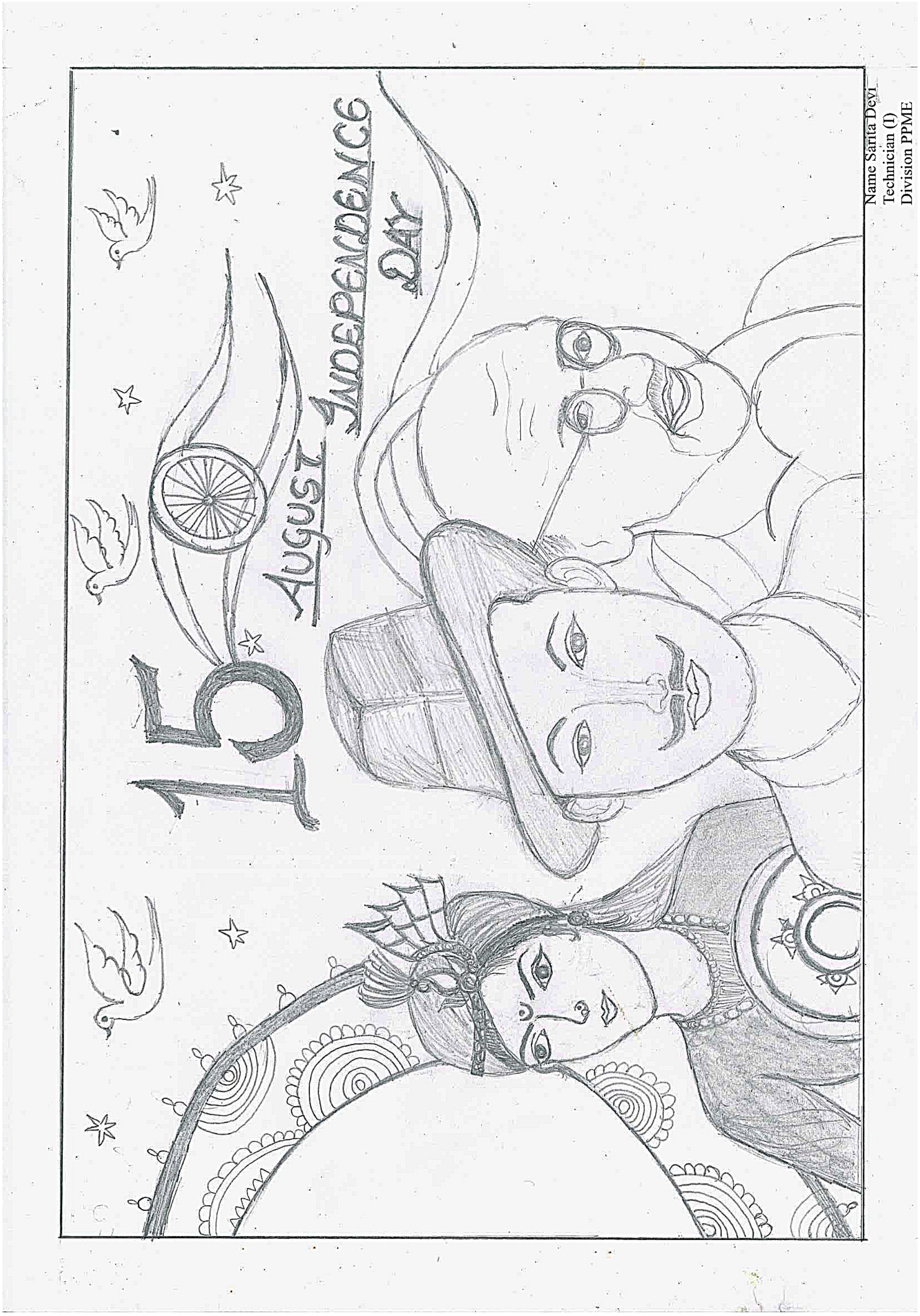
15
AUGUST
INDEPENDENCE
DAY
Name Sarita Devi
Technician (I)
Division PPME

सरिता देवी

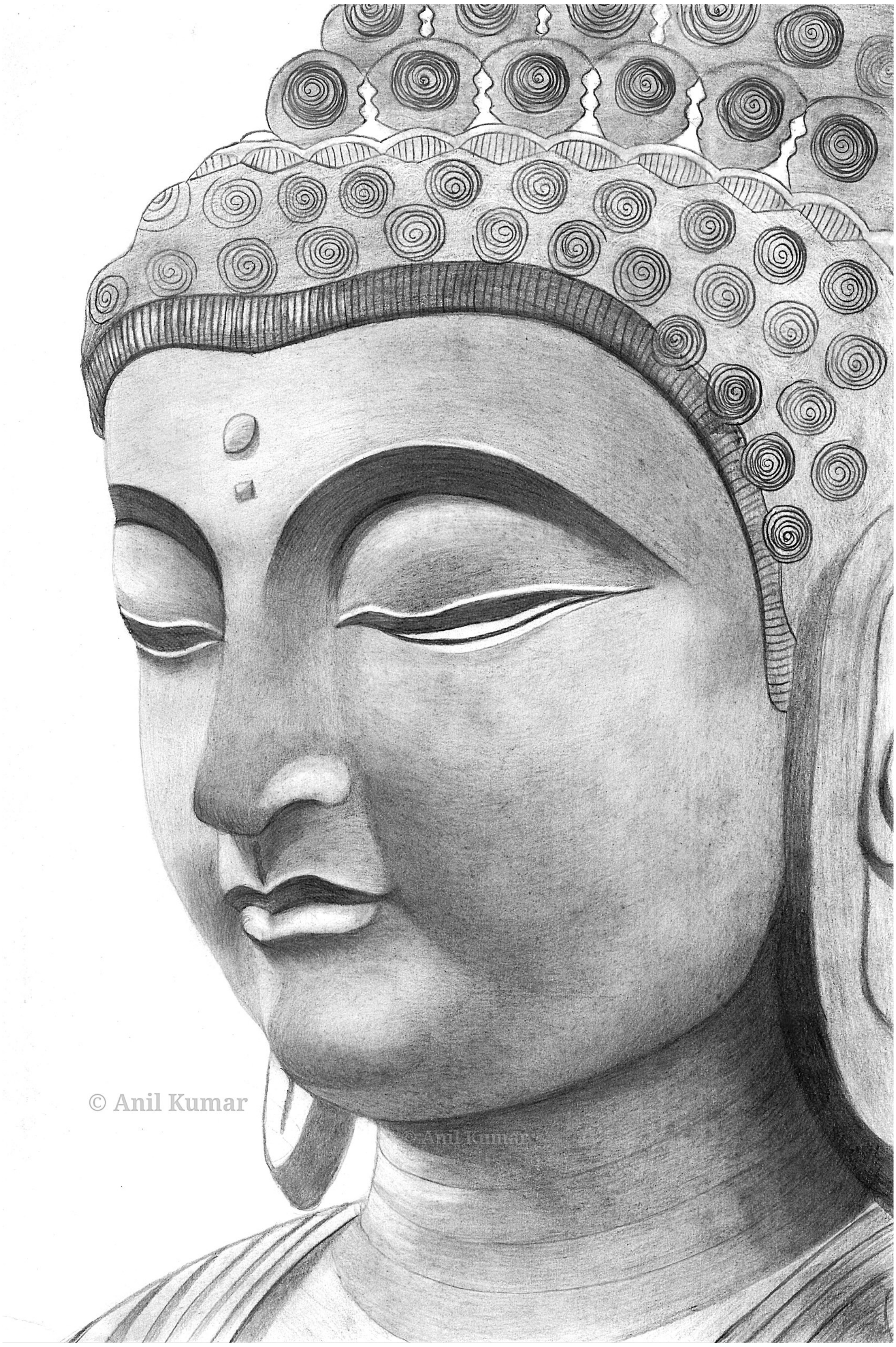

अनिल कुमार

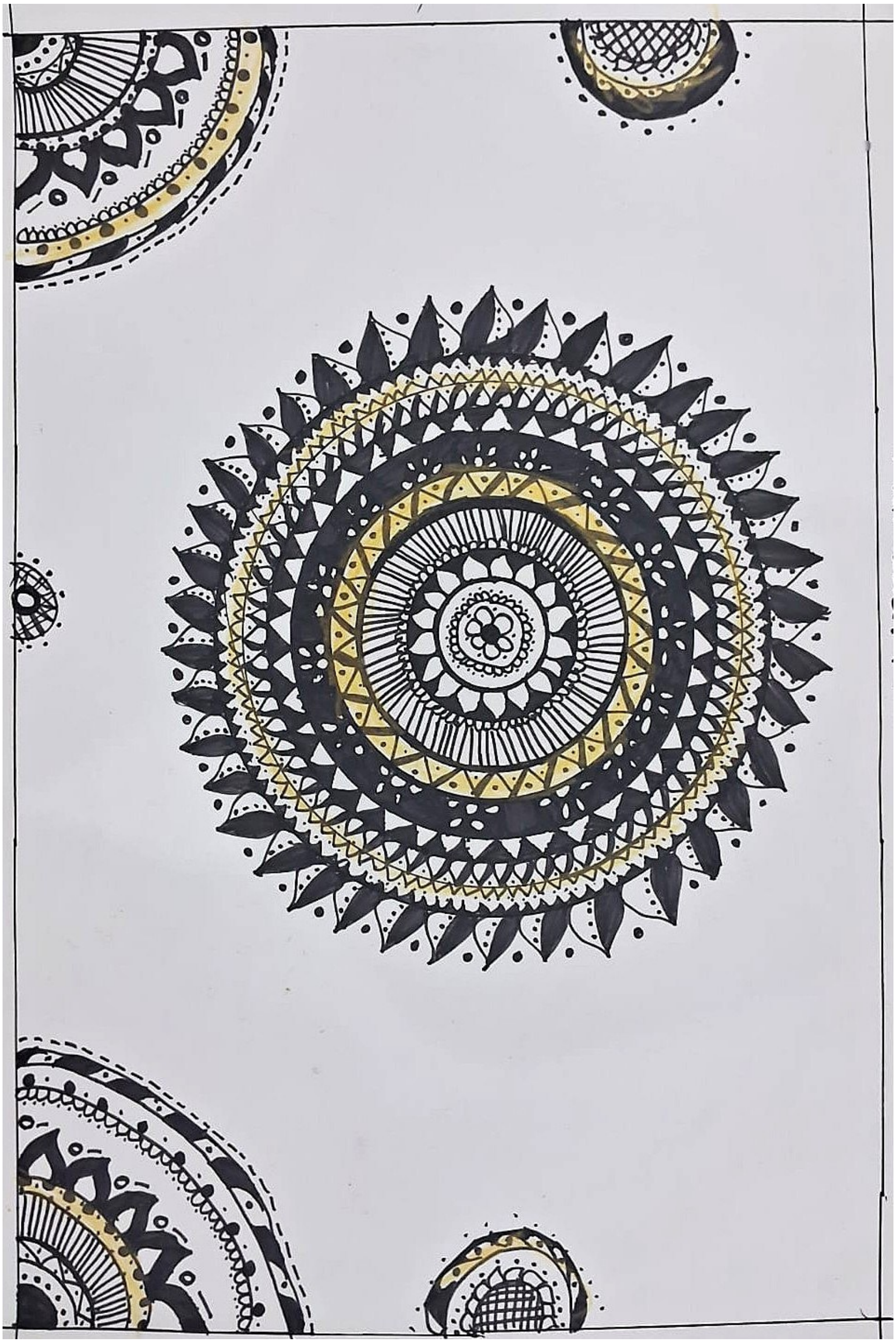

हिमानी जोशी

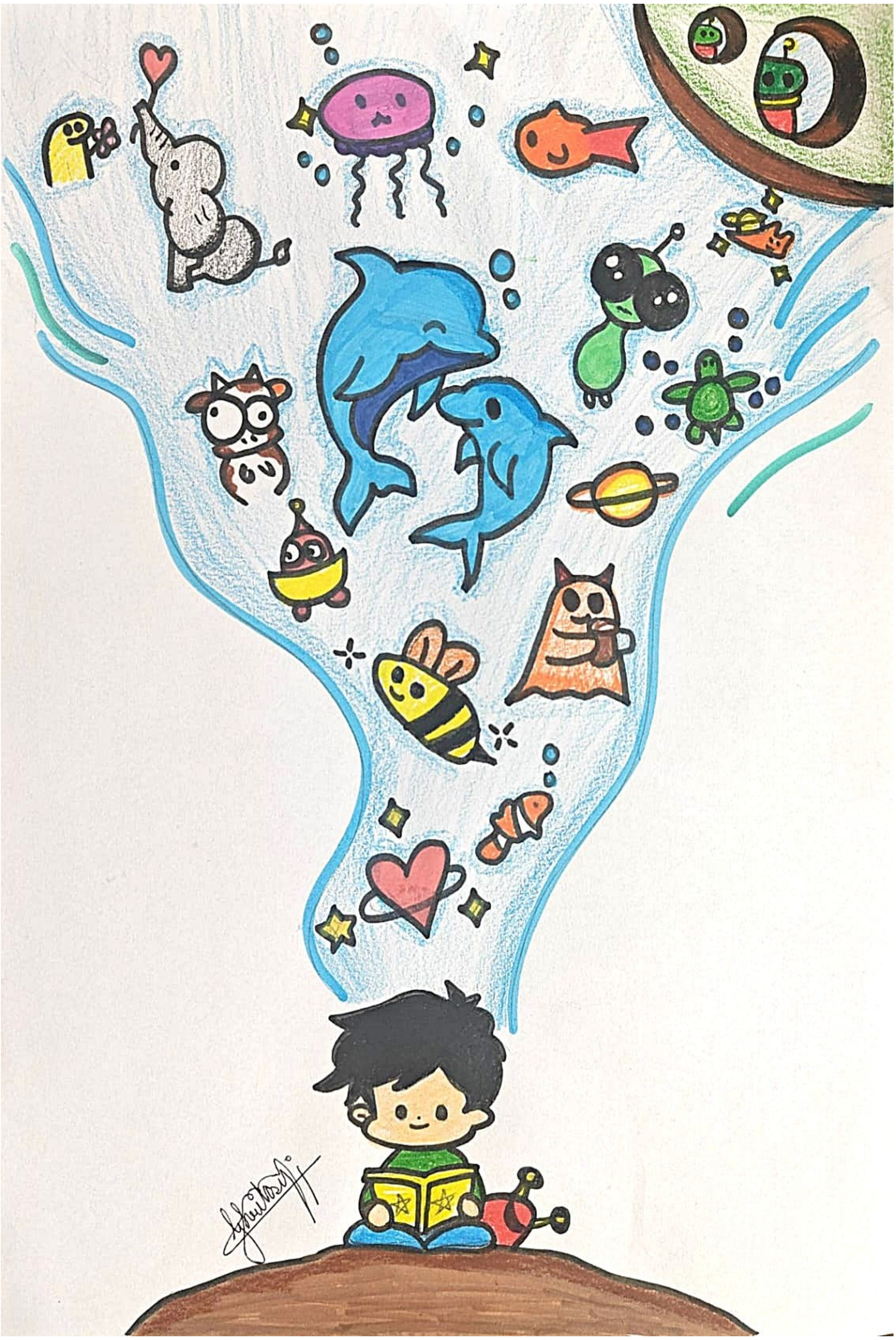

गृताशी नड्डा

भाविका गुप्ता

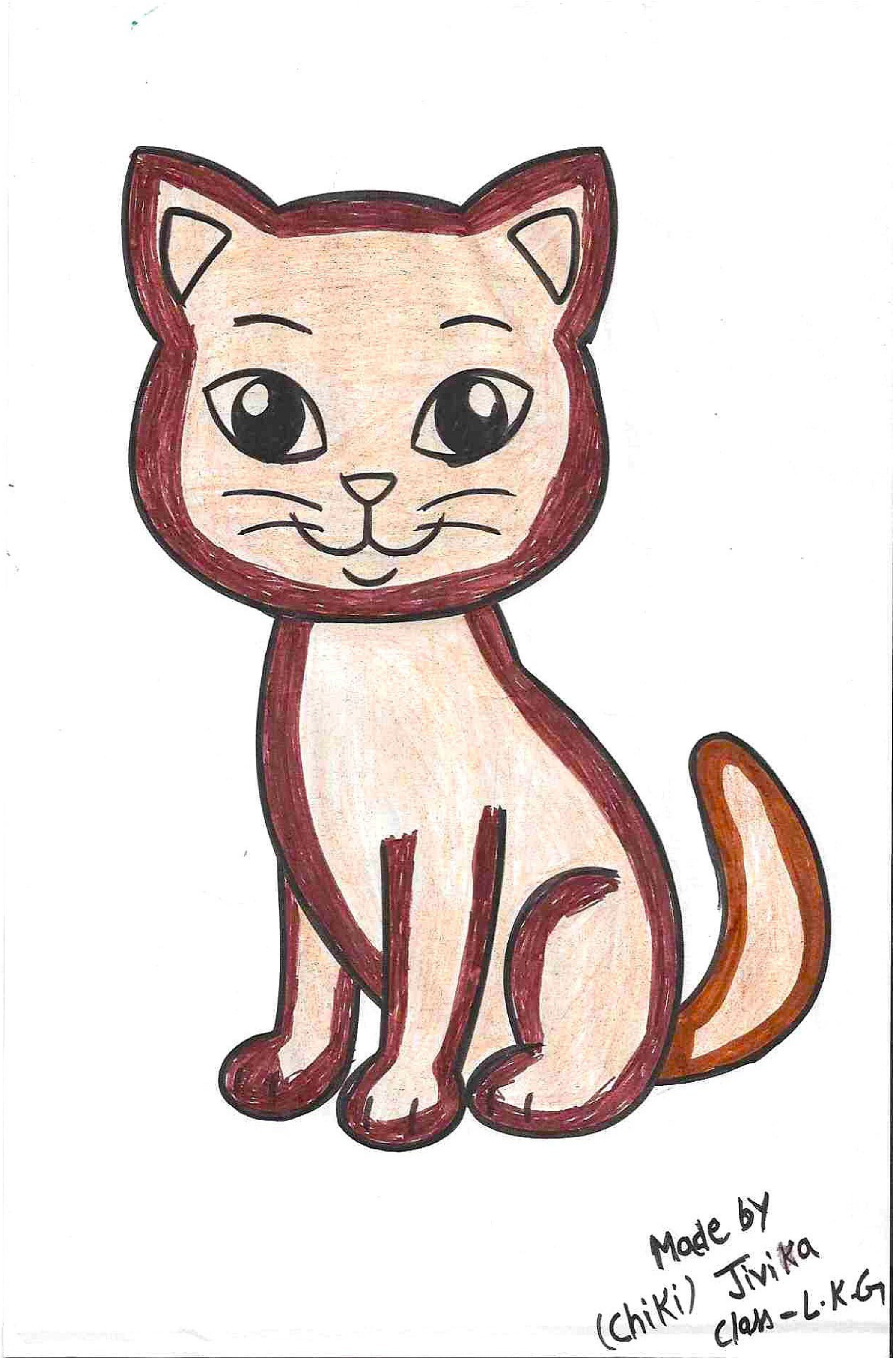

जीविका ढुलल

यष्कृतिहा ठाकुर

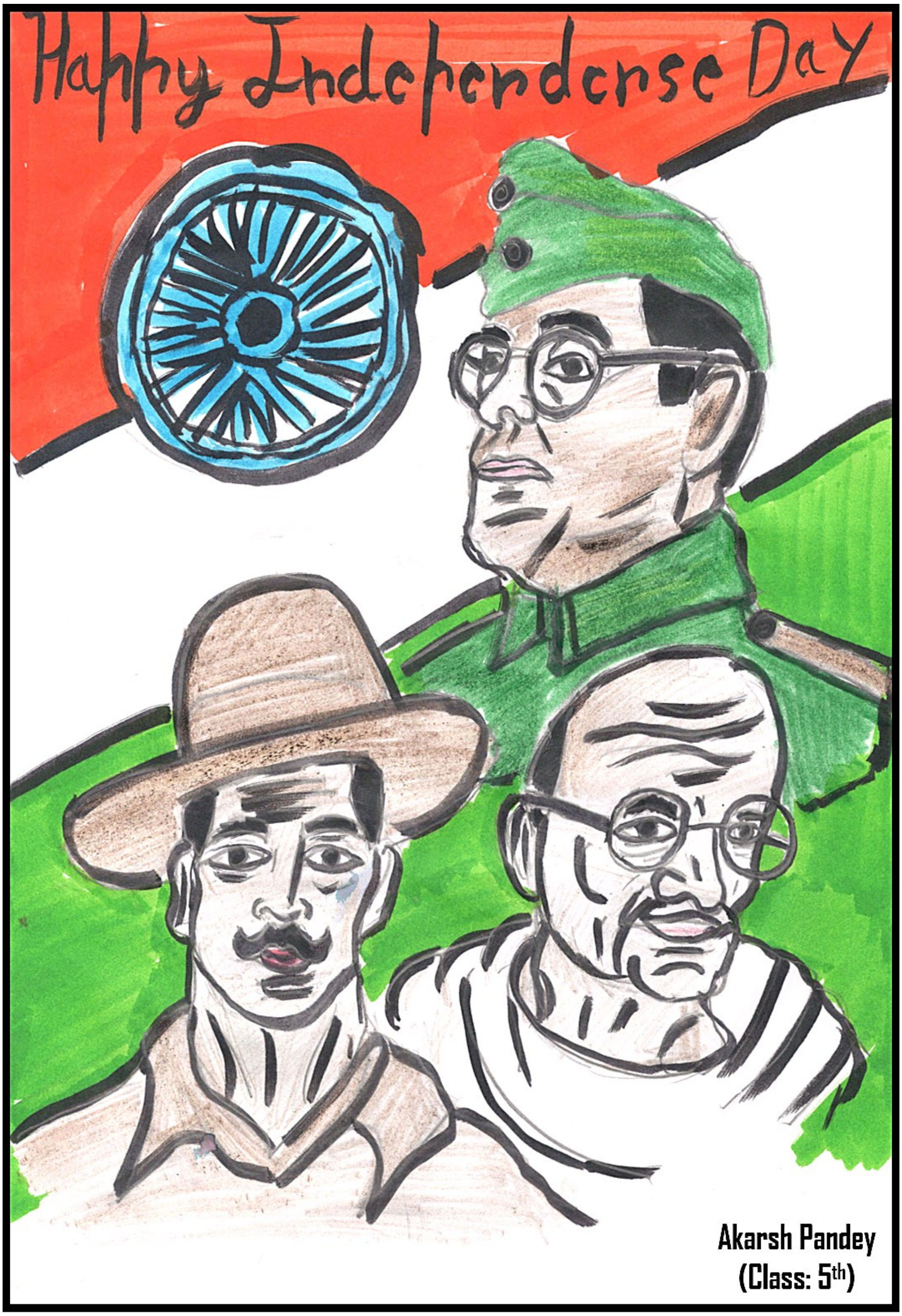

आकर्ष

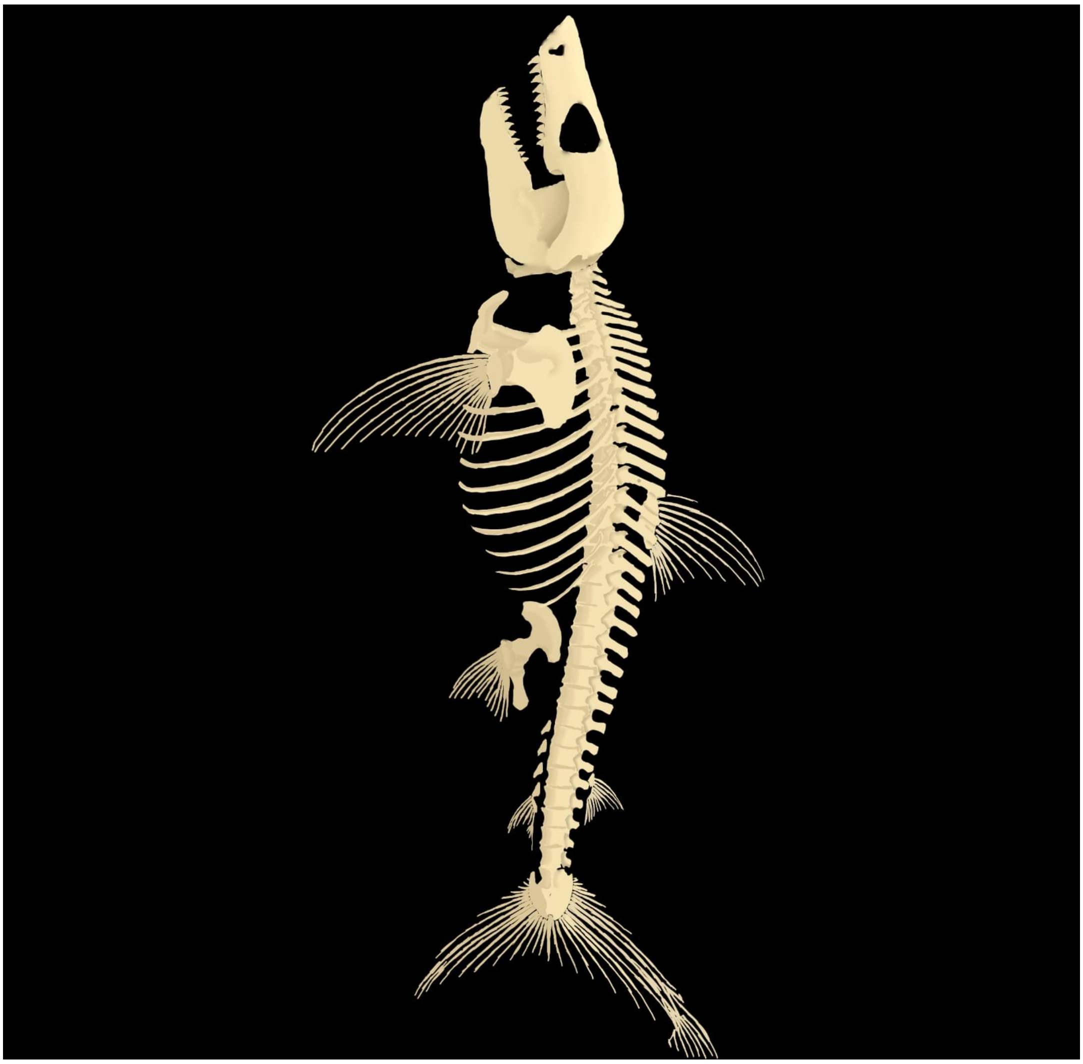

अथर्व राणा

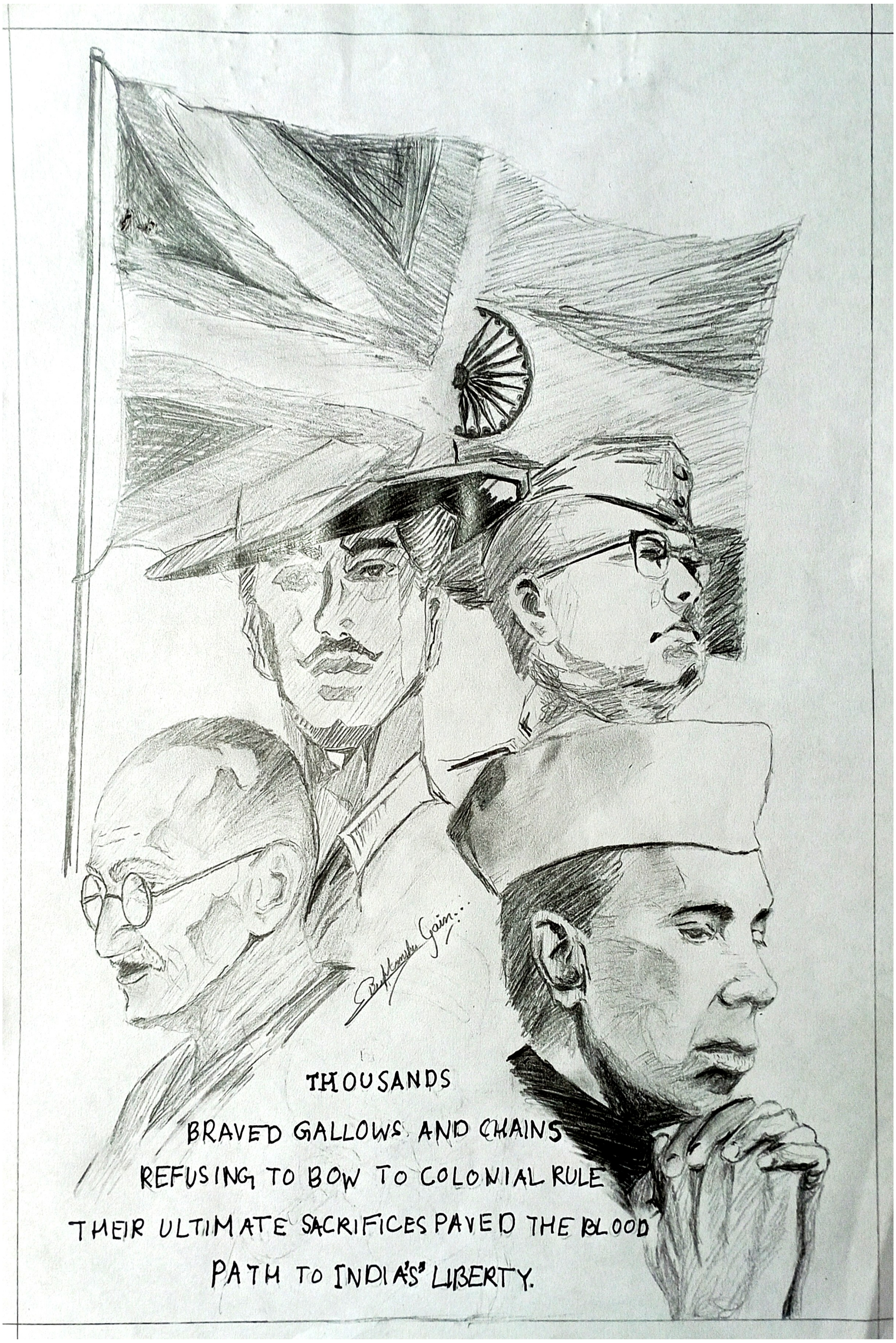
THOUSANDS
BRAVED GALLOWS AND CHAINS
REFUSING TO BOW TO COLONIAL RULE
THEIR ULTIMATE SACRIFICES PAVED THE BLOOD
PATH TO INDIA'S' LIBERTY.

दीप्तांशु गाईन

दीवांगना गाईन

सी एस आई आर–हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, भारत

CSIR-IHBT
INDIA
1983

उज्जवल भविष्य का नवोन्मेष हब

Innovation Hub for Better Tomorrow